शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# रेणु के 'मैला आँचल' में ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति

डॉ. मनोरमा अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय होल्कर विज्ञान महाविद्यालय,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

## शोध संक्षेप

*साहित्य जीवन से संपृक्त होकर शाश्वत होता है। जब वह सत्य से असंपृक्त होता है तब वह एकांगी और निष्प्राण हो जाता है। हिन्दी साहित्य के कथा संसार में जीवन और जीवन का सत्य बिखरा हुआ है। भारत गांव में बसता है किसान जीवन और उसकी समस्यायें अनेक हैं। लेखकों का ध्यान उनके अभि शप्त जीवन और उनसे जुड़ी व्यथा-कथाओं की ओर जाता है। यही कारण है कि अपनी रचनाओं में वे अंधेरे में जीने वाले अभिषप्त मजदूर किसानों की व्यथा-कथा को अभिव्यक्त करते रहे है।*

*आजादी के बाद लेखकों का ध्यान अंचल वि शेष में रहने वाली जनजातियों, अशिक्षित निवासियों की ओर गया और केवल उनकी समस्याओं को उपन्यासों में लिखने लगे। इन उपन्यासों में जो कथाएं आई हैं, वे कुछ पात्रों की न होकर सामाजिक इकाइयों की हैं, जो मानवीय संभावनाओं को, उसकी संवेदनाओं को अपने अंचल में समेटे हुए आज भी अंधेरे में जीते हुए रोशनी की तलाश में हैं। उनकी आँखों में उजास है और वे इस उम्मीद के सहारे आज के पहाड़ जैसे दिन को बिता रहे हैं कि आने वाले कल का सूरज उन्हें भी रोशनी देगा, वे अंधेरे से मुक्त होगें और उनके दिन फिरेंगे। प्रस्तुत शोध पत्र में फणीश्वरनाथ रेणु के आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' में ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति पर विचार किया गया है।*

## आंचलिक उपन्यास और रेणु

आंचलिक शब्द अंचल से बना है जिसकी व्युत्पत्ति 'अंच' धातु से 'अलच' प्रत्यय के योग से हुई है। अंचल शब्द में तद्धित 'ठ्ज' प्रत्यय के योग से आंचलिक शब्द बनता है। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी दे श के अंचल क्षेत्र प्रान्त या नगर या ग्राम विषय से संबंधित क्षेत्र पर आधारित लिखे गए उपन्यास को आंचलिक उपन्यास कहते हैं। इसकी पृष्ठभूमि गांव या अंचल विशेष से जुड़ी होती है।

रेणु अपनी मिट्टी और गांव के भोले-भाले मजदूर किसानों के मसीहा हैं। वे पूरे अर्थो में एक ईमानदार और प्रतिबद्ध लेखक माने जाते हैं। उनकी प्रतिबद्धता किसी राजनीतिक विचारधारा के प्रति न होकर समूची मानवता के प्रति है। जब रेणुजी से पूछा गया "आप क्यों लिखते है ?" उन्होंने कहा "मैं अपने आप को खोजता हूँ इसलिए लिखता हूँ। उनसे पूछा कि आप अपने बारे में कुछ खास बात तो बताइये , इस पर उन्होंने कहा "खास बात है मैं नहीं जानता पर हाँ इतना जरूर मानता हूँ कि जब तक मैं लिखने के लिए मजबूर नहीं होता मैं नहीं लिखता। पागल होने के बाद भी लिखता हूँ। रही क्यों ? लिखने की बात तो अपना दुःख दर्द के लिए लिखता हूँ।" रेणु की आस्था अपनी जमीन के प्रति गहरी है उनका विश्वास है। "कम से कम मिट्टी को पहचानना ...। मिट्टी और मनुष्य से गहरी मुहब्बत छोटी बात नहीं। " इसके आगे भी वे

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कहते हैं . "मिट्टी और मनुष्य से इतनी गहरी मुहब्बत किसी लेबोरेटरी में नहीं बनती।"

देवीशंकर अवस्थी ने लिखा है , "मैला आंचल उत्तर भारत के प्रत्येक उस मैले आंचल का चित्र है, जो सदियों से सोते-सोते जागकर अंगड़ाई ले रहा है।" महेन्द्र चतुर्वेदी ने लिखा है, "सारा आँचल ही मानो कलाकर की तूलिका के स्पर्श से जी उठा है।"

मैला आंचल रेणु का सर्वप्रथम उपन्यास होने के साथ-साथ हिन्दी का पहला आंचलिक उपन्यास है जो 9 अगस्त 1954 को प्रका शित हुआ। रेणु के 'परती परिकथा ' तथा 'जुलुस' अन्य आंचलिक उपन्यासों में आते हैं।

'मैला आंचल' से रेणु की अलग साख बनी। मैला आंचल का शाब्दिक अर्थ गंदा आंचल या पिछड़ा हुआ आँचल होता है। मैला इसलिए भी यह कई दृष्टि से अन्य बातों की अपेक्षा अधिक पिछड़ा हुआ है। पूर्णि या जिला इस उपन्यास का प्रमुख घटना केन्द्र है। कथाकार ने उपन्यास का नामकरण भी लाक्षणिक आधार पर किया है। भूमिका में रेणु ने लिखा है ,. "इसमें फूल भी है, धूल भी है , गुलाब भी कीचड़ भी , चन्दन भी , सुन्दरता भी है, कुरूपता भी है।" मैं किसी से भी दामन बचाकर नहीं निकल पाया.....कथाकार ने यह भी कहा कि "मैंने इसके एक ही गांव को पिछड़े गांव का प्रतीक मानकर उपन्यास का कथाक्षेत्र बनाया है। कविवर पंत की एक पंक्ति 'धूल भरा सा मैला आंचल ' से भी कहीं इसका साम्य मिलता है।

मैला आंचल की कहानी का प्रारंभ मेरीगंज में अस्पताल खोलने की योजना के सिलसिले में आये हुए जिला बोर्ड के सदस्यों के आगमन के साथ होता है , तथा उपन्यास का अंत गांव के गांधीवादी नेता वावनदास की मृत्यु से चित्रित किया गया है।

मैला आंचल का मेरीगंज गांव राजनीतिक चेतना सम्पन्न गांव है। लेखक की व्यंग्य विधायिनी शक्ति ने गांव में फैले पारस्परिक वैमनस्य, आपसी रागद्वेष एक दूसरे की टकराहट का बड़ा ही निर्मम उद्घाटन किया है और विशिष्टता इस बात में है कि लेखक कटु से कटु व्यंग्य, संश्लिष्ट से संश्लिष्ट स्थितियां उत्पन्न करता है , लेकिन किचिंत भी अपने को किसी दल वि शेष के साथ नहीं बांधता।

रेणु ने बड़े ही संतुलित ढंग से गांव की घुटनभरी जिन्दगी की कसमसाहट व्यक्त की है तथा जनता से कटते हुए अपने दलीय स्वार्थो में लिपटे हुए इन दलों के संकीर्ण दायरों की खोज करते हुए लेखक ने शहर से परिचालित अविवेकपूर्ण गंदी राजनीति पर गहरे एवं संष्लिष्ट व्यंग्य किये हैं।

भारत की राजनीतिक जिन्दगी की यह एक निर्मम सच्चाई है कि उसका हर दल जातीयता के प्रति सबक हैं। चाहे कांग्रेस हो या जनसंघ , कम्युनिष्ट हो या सोषलिष्ट सभी के निर्णय जाति पर होते है। मेरीगंज में अ शिक्षा और अंधविश्वास का भले ही कुहासा है, लेकिन राजनीतिक दलीय प्रतिबद्धता और दूसरे की राजनीतिक समझदारी बढ़ती हुई दृष्टिगत होती है। स्वाधीनता सेनानी बालदेव आजादी के बाद वह बालदेव नहीं रहता। मेरीगंज में उसके रहते हुए उसका शिष्य कालीचरण युगों से पीड़ित है। दलित और उपेक्षित लोगों का सोशलिस्ट नेता है वह उनके दिलों में वितृष्णा की आग भर रहा है, ताकि वे लोग भी अपने हक के रूप को पहचानें। वह भाषण देते हुए कहता है, "यह जो लाल झंडा है, जनता का झंडा , अवाम का झण्डा है , इंकलाब

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

का झण्डा है इसकी लाली उगते हुए आफ्ताब की लाली है यह खुद आफ्ताब है। इसकी लाली इसका लाल रंग क्या है ?.....यह गरीबों, महरूमों, मजलूमों मजबूरों, मजदूरों, के खून में रंगा हुआ झण्डा है।....जमीनों पर किसानों का कब्जा होगा। चारों ओर लाल धुआ मंडरा रहा है। उठो किसानों किसानों के सच्चे सपूतों। धरती के सच्चे मालिकों उट्ठो। क्रांति की मशाल लेकर आगे बढ़ो।"

मेरीगंज गांव के यौन संबंधों के चित्रिण में लेखकीय दृष्टि किसी रोमानी संस्कार की शिकार दृष्टिगत नहीं होती, अपितु उसके चित्रण से यही जाहिर होता है कि वह हमारे सामाजिक जीवन की भोगी हुई विसंगतियों पर व्यंग्य कर हमें अपने मूलभूत कारणों की ओर सोचने के लिए विवश कर रहा है।

रमजूदास की पत्नी तो फूलिया के मां-बाप को यहां तक कहती है, "तुम लोगों को न तो लाज है न शरम, कब तक बेटी की कमाई पर लाल किनारी वाली साड़ी चमकाओगी ? आखिर एक हद होती है किसी बात की। मानती हूँ कि जवान बेवा बेटी दुधारू गाय के बराबर है मगर इतना मत चूसों कि देह का खून भी सूख जाए।"

इससे लगता है कि सारे गांव की सामाजिक जिन्दगी में नैतिकता की अवधारणा टूट रही है। गांव के बालदेव जी का लक्ष्मी कोठारिन से और नेता कालीचरण का चर्खी स्कूल की मास्टरनी से अवैध यौन संबंध है।

इस तरह गांव की विभिन्न अनैतिकता जन्य मैली स्थितियों के रूपायन में अपने नाम की सार्थकता स्पष्ट करता हुआ लगता है।

उपन्यास के सारे पात्र मिट्टी और परिवे श से गढे हुए होने के कारण यथार्थ प्रतीत होते हैं। यह रेणु के लेखन की रचना कु शलता का परिणाम है कि उपन्यास के दानवीय पात्र भी इस प्रकार परिस्थितियों की जकड़न में फंसते है कि उनके अंतर्गत एक सरलता और मानवीयता अनुभव होती है।

कुल मिलाकर कह सकते है कि , "जैसे विभिन्न मिट्टी के प्रकारों में लगाये गए पौधों में भिन्न-भिन्न सौन्दर्य और सुगंध होती है , वैसे ही नए और आकर्षक पात्र हमें आंचलिक उपन्यासों में रेणु ने दिये है।"

"मैला आंचल" में बिखरे हुए प्रसंग बिखरी हुई घटनाएँ बिखरे हुए पात्र एक-दूसरे के सर्जन में अपरिहार्य रूप से योग दिये बिना आते हैं और अपनी नियति झेले चले जाते हैं, और एक सूत्रता में नहीं बंधते , क्योकि उनका उद्देष्य अंचल का समग्र बोध कराना होता है।

कथाकर ने उपन्यास के एक पात्र के माध्यम से अपन लेखकीय दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए लिखा है, "मैं फिर काम करूगाँ, यही इसी गांव में। आंसू से भगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहायेगें। मैं साधना करूगाँ , ग्रामवासिनी भारत माता के मैले आंचल तले। कम से कम एक गांव के कुछ प्राणियों के मुरझाये होठों पर मुस्कुराहट लौटा सकूं। उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूं।

## संदर्भ सूची

*1 रेणु से भेंट- पृष्ठ 113*
*2 मैला आंचल, पृष्ठ 40*
*3 मैला आंचल पृष्ठ405*
*4 हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण - महेन्द्र चतुर्वेदी पृष्ठ 211*
*5 मैला आंचल, रेणु पृष्ठ109*
*6 मैला आंचल, रेणु, पृष्ठ 62-63*
*7 हिन्दी उपन्यास सिद्धांत और विवेचना , सं. महेन्द्र, पृष्ठ140*